**E-CONTENT**

**MJMC,  SEM-II, PAPER : CC-7  
  
Topic : PHOTOGRAPHY (HISTORY AND TECHNICAL DEVELOPMENT) CONTINUE…**

**Date : 1-02-2020, TIME : 12.00 P.M.-1.00 P.M.**

**PREPARED BY : AMIT KUMAR**

**PHOTOGRAPHY (HISTORY AND TECHNICAL DEVELOPMENT) CONTINUE…**

Luis Daguerre की एक तस्वीर : Daguerreotype

निप्स के बाद उनके काम को फ्रांस में ही Louis Jacques Mandé Daguerre (लुई जैक मैंडी डैगियर) ने आगे बढ़ाया। लुई डैगियर ने प्रक्रिया को और आसान बनाकर उसका व्यावसायिक इस्तेमाल संभव किया। लुई डैगियर की विकसित की हुई प्रोटोग्राफी प्रक्रिया ‘डैगियरटाइप’ (Daguerreotype) के नाम से प्रसिद्ध हुई और उसके बनाए हुए फोटोग्राफ ‘डैगियरटाइप’ तस्वीरें कहलाईं। इसमें सिल्वर-कोटेड कॉपर प्लेट का इस्तेमाल किया जाता था। दुनिया में 1839 से 1860 तक इसी विधि से फोटो तैयार किए गए।

इसके बाद कोलोडियन (collodion) मेथड का दौर आया जिसका आविष्कार इंगलैंड के फ्रेडरिख स्कॉट आर्चर ने किया और बच्चों के लिए लिखने वाले लेविस कैरोल ने इस विधि से अनेक फोटो तैयार किए। इस विधि में फोटो-सेंसिटिव मटीरियल को गीले चिपचिपे रूप में इस्तेमाल किया जाता था। इसलिए इसे ‘collodion wet plate’ प्रॉसेस कहा गया। यह फोटो-नेगेटिव का उस जमाने के हिसाब से सुधरा हुआ रूप था।

फोटोग्राफी की विधियां 19वीं शताब्दी (1800s) तक लोकप्रिय नहीं हो पाई थीं। 20वीं शताब्दी (1900s) की शुरुआत तक अपनी जटिल और लंबी प्रक्रियाओं के कारण यह आम लोगों के वश के बाहर थी। इस समय तक कैमरा लकड़ी के एक भारी बक्से की शक्ल में था।

लेकिन 20वीं शताब्दी फोटोग्राफी में क्रांति का दौर लेकर आई जब अमेरिका के जॉर्ज ईस्टमैन ने Eastman Kodak कंपनी की स्थापना कर छोटे और हल्के फोटोग्राफी रिल वाले Kodak कैमरे बनाने शुरू किए। सन 1900 में Kodak के Brownie box camera ने आकर फोटोग्राफी की दुनिया में उस जमाने के हिसाब से क्रांति ला दी। हम अपने पुराने फिल्म-रील वाले कैमरों में जो रील (Reel) लगाया करते थे उसका आविष्कार इसी Eastman Kodak ने किया था। फिर बाजार में ‘लीका’ (Leica) और ‘आर्गस’ जैसी कैमरा बनाने वाली दूसरी कंपनियां भी आ गईं।

यह था ब्लैक & व्हाइट फोटो का जमाना, लेकिन फिर जल्द ही 1935 में Kodak ने अपना Kodachrome कलर फिल्म पेश किया और इसके बाद कलर फोटो युग की शुरुआत हुई। SLR आए, लेंसों में सुधार हुए इस तरह कैमरों में लगातार सुधार होते गए, सुविधाएं और फीचर्स जुड़ते गए। फिर डिजिटल तकनीक विकसित होने लगी।

1980 के दशक में फोटो-रील की जगह डिजिटल इमेज सेंसर वाले डिजिटल कैमरों ने ले लिया। यह सही मायने में फोटोग्राफी की दुनिया में एक जन-क्रांति थी क्योंकि इसके बाद फोटोग्राफी हर आम आदमी के हाथों तक पहुंच गई। अब कैमरे में रील लोड करने और फिर डार्क-रूम में नेगेटिव से फोटो तैयार करने की बाध्यता खत्म हो गई। डिजिटल कैमरों के साथ-साथ डेस्कटॉप/लैपटॉप कंप्यूटरों के सुलभ हो जाने से हर किसी के लिए फोटोग्राफर बन जाना संभव हो गया।